تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَ رَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَ اٰتَيْنَا
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَ اَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَ لٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَ لٰكِنَّ
اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۲۵۳﴾

आयत न० 253

ये (सभी) **रसूल** (जिन का अभी ज़िक्र आया है) **ऐसे हैं कि हम ने उन में से कुछ को कुछ पर बड़ाई दी है,** (जैसे) **कुछ उनमें वो हैं जिन से अल्लाह तआला ने** (फ़रिशते के वास्ते के बिना) **बात की** (यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम) **और कुछ के दर्जों को बहुत ऊंचा किया, और हमने मरयम के बेटे ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **को ख़ुली निशानियां दीं** (यानी मोजिज़े दिये) **और हमने जिब्रील** (अलैहिस्सलाम) **से उन की मदद की** (कि यहूदियों से हिफ़ाज़त करने के लिए हर वक़्त साथ रहते थे)**, और अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो** (उम्मत के) **जो लोग उन** (पैग़म्बरों) **के बाद हुए हैं** (कभी दीन में झगड़ा करके) **आपस में न लड़ते इसके बाद कि उन के पास** (सच्चे दीन के) **सुबूत** (पैग़म्बरों के वास्ते से) **पहुंच चुके थे लेकिन वो लोग आपस में दीन में अलग-अलग हुए तो उन में कोई तो ईमान लाया और कोई काफ़िर रहा** (फिर बात लड़ाई झगड़े तक पहुंच गई)**, और अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो वो लोग आपस में न लड़ते, लेकिन अल्लाह तआ़ला** (अपनी हिकमत से) **जो चाहते हैं** (अपनी क़ुदरत से) **वो ही करते हैं(253)**

नोटः- इसमें हुज़ूर सल्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि ईमान किसी भी उम्मत में आम नहीं हुआ किसी ने माना किसी ने नहीं माना इस लिए आप न मानने वालों का अफ़सोस न कीजिए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَ لَا خُلَّةٌ وَّ لَا شَفَاعَةٌ ؕ وَ
الْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۵۴﴾

आयत न० 254

ऐ ईमान वालो (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च कर लो उन चीज़ों** (में) **से जो हम ने तुम को दी हैं इससे पहले कि वो दिन आजाए** (यानी क़ियामत का दिन) **जिस में** (कोई चीज़ नेक काम का

बदल न हो सकेगी क्योंकि उसमें) **न तो ख़रीदना बेंचना होगा** (कि कोई चीज़ देकर नेकियां ख़रीद लो) **और न** (ऐसी) **दोस्ती होगी** (कि कोई तुम को अपनी नेकियां देदे) **और न** (अल्लाह तआला की इजाज़त के बिना किसी की) **कोई सिफ़ारिश होगी** (जिससे नेकियों की तुम को ज़रूरत न रहे), **और काफ़िर ही लोग ज़ुल्म करते हैं** (कि जान और माल को गुनाह के कामों में ख़र्च करते हैं तुम तो ऐसे न बनो)(254)।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا
الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا
بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾

आयत न० 255

अल्लाह (जो बेऐब और तमाम तारीफ़ों वाला है उस) **के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं,** (जो कि सदा) **ज़िन्दा** (और बाक़ी रहने वाला) **है** (और सब जहानों को) **संभालने वाला है, न उस को झपकी आती है और न नींद** (यानी कभी थकान नहीं होती), **जो चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं सब का वो अकेला ही मालिक है, ऐसा कौन है जो उसके आगे सिफ़ारिश कर सके बिना उस की इजाज़त के** (यानी ऐसा कोई नहीं, और वो सब कुछ) **जानता है जो कुछ लोगों के सामने है या छिपा हुआ है, और वो सब** (जहान वाले) **उस के इल्म के किसी हिस्से को नहीं जान सकते मगर जितना** (इल्म) **वो** (ख़ुद) **ही** (देना) **चाहे** (देदे), **उस की कुर्सी** (इतनी बड़ी है कि उस) **में** (सातों) **आसमान और ज़मीन समाए हुए हैं, और उस को इन की** (यानी ज़मीन व आसमानों की) **हिफ़ाज़त कुछ भारी नहीं है, और वो सबसे बड़ा दर्जे वाला** (और) **बड़ी शान वाला है**(255)।

नोटः- इस आयत को आयतुल कुर्सी कहते हैं। हदीस में इस की बड़ी बरकतें बयान हुई हैं। यह जिस घर में पढ़ी जाए शैतान उस घर से निकल जाता है।

لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙۚ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ یُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَ اللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۵۶﴾ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۙ یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی

النُّوْرِ ۬ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

आयत न० 256 से 257

दीन के बारे में (कोई ज़ोर) **ज़बरदस्ती नहीं, बेशक हिदायत** (की राह) **गुमराही से अलग हो** (कर साफ़ हो) **चुकी है, बस जो गुमराह करने वालों की बात को न माने और अल्लाह तआ़ला पर यक़ीन रक्खे तो उस ने** (ऐसी) **मज़बूत रस्सी को पकड़ लिया जो** (कभी) **टूटने वाली नहीं, और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनते** (और) **जानते हैं(256) अल्लाह तआ़ला साथी हैं ईमान वालों के उन को** (कुफ़्र के) **अन्धेरों से निकाल कर** (या बचा कर इस्लाम की) **रौशनी की तरफ़ लाते हैं, और जो लोग काफ़िर हैं उन के साथी शैतान हैं** (जिन्नात में से हों या इन्सानों में से) **वो उन को** (इस्लाम की) **रौशनी से निकाल कर** (या बचा कर कुफ़्र के) **अन्धेरों की तरफ़ ले जाते हैं, ऐसे लोग** (जो इस्लाम को छोड़ कर कुफ़्र अपनाएं) **दोज़ख़ में रहने वाले हैं,** (और) **ये लोग उसमें सदा-सदा को रहेंगे(257)**

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا
اُحْيٖ وَ اُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَ
اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّ هِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ
اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ
قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَ لِنَجْعَلَكَ اٰيَةً
لِّلنَّاسِ وَ انْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَ لٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ
قَلْبِيْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ
يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾

आयत न० 258 से 260

क्या आपने उस आदमी को नहीं देखा जिस ने (हज़रत) **इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **से उन**

के रब के बारे में बहस की (यानी नमरूद बादशाह जो अपने आप को सजदा कराता था इस घमन्ड़ में) **कि अल्लाह तआ़ला ने उस को हुकूमत दी थी, और** (जब हज़रत इब्राहीम उसके सामने आए सजदा न किया नमरूद ने वजह पूछी तो हज़रत इब्राहीम ने कहा कि मैं अपने रब के सिवा किसी को सजदा नहीं करता उसने कहा कि रब तो मैं ही हूं आप ने जवाब दिया कि मैं हाकिम को रब नहीं मानता हज़रत) **इब्राहीम ने कहा मेरा रब वो है जो ज़िन्दगी देता है और मौत** (भी) **देता है** (नमरूद ने दो क़ैदी मंगा कर बेक़ुसूर को मार डाला और क़ुसूरवार को छोड़ दिया और) **वो कहने लगा कि मैं** (जिस को चाहूं) **मारता हूं** (जिसे चाहूं) **ज़िन्दा रहने देता हूं,** (इस पर) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि बेशक अल्लाह सूरज को** (रोज़ाना) **पूरब से निकालता है तुम** (एक दिन) **पच्छम से निकाल**(कर ला)**दो तब** (तो) **वो काफ़िर हैरान रह गया** (इस बात का कुछ जवाब नहीं दे सका)**, और अल्लाह तआ़ला बे इन्साफ़ लोगों को सीधी राह नहीं दिखाते** (कि इस दलील को जान कर भी ईमान नहीं लाया)(258) **क्या तुम को इस तरह का क़िस्सा भी पता है जैसे एक आदमी था कि** (चलते-चलते) **एक ऐसे शहर से गुज़रा कि उस के मकान अपनी छतों पर गिर गये** (थे यानी पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें गिर गईं और सब आदमी मर मरा गये) **थे** (वो आदमी यह हालत देख कर अचम्भे से) **कहने लगा कि** (पता नहीं) **अल्लाह तआ़ला इस शहर को** (यानी इसके मुर्दों को) **इसके मरने के बाद किस तरह से** (क़ियामत में) **ज़िन्दा करेंगे** (यानी ज़िन्दा करने का यक़ीन तो था मगर यह काम कैसे होगा यह सवाल दिल में आया, अल्लाह तआ़ला ने यह बात उस को दुनिया ही में दिखाने का इरादा किया) **तो** (इसलिए) **अल्लाह तआ़ला ने उस आदमी** (की जान लेकर उस) **को सौ साल तक मुर्दा रक्खा फिर** (सौ साल के बाद) **उस को ज़िन्दा कर दिया,** (और फिर) **पूछा कि तू कितने दिनो इस हालत में रहा, उस आदमी ने जवाब दिया कि एक दिन रहा हूंगा या एक दिन से भी कम** (यानी बहुत थोड़े वक़्त)**, अल्लाह तआ़ला ने कहा कि नहीं बल्कि तू** (इस हालत में) **सौ साल रहा है** (और अगर अपने बदन के अन्दर बदलाव न देख कर अचम्भा हो) **तो अपने खाने** (पीने) **की चीज़ को देख लें कि** (ज़रा) **नहीं सड़ी गलीं** (एक क़ुदरत तो हमारी यह है)**, और** (दूसरी क़ुदरत देखने के लिए) **अपने** (सवारी के) **गधे की तरफ़ देख** (कि गल सड़ कर क्या हाल हो गया और हम अभी इस को तेरे सामने ज़िन्दा किये देते हैं) **और** (हम ने तुझ को इस लिए मार कर ज़िन्दा किया है) **ताकि हम तुझ को** (अपनी क़ुदरत की) **एक निशानी लोगों के लिए बना दें और** (अब इस गधे की) **हड्डियों की तरफ़ देख कि हम उन को किस तरह बनाते हैं फिर उन पर गोश्त चढ़ा देते हैं** (फिर उस में जान डाल देते हैं, बस ये सब

काम यूं ही कर दिये गये), **फिर जब यह सब हालत उस आदमी ने** (अपनी आंखों से) **देख ली तो** (यकायक जोश में आकर) **कह उठा कि मैं** (दिल से) **यक़ीन रखता हूं कि बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं(259) और** (वो वक़्त याद करो) **जब इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह तआ़ला से) **कहा कि या रब मुझ को दिखा दीजिए कि आप** (क़ियामत में) **मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेंगे, अल्लाह तआ़ला ने कहा क्या आप को** (हमारी क़ुदरत का) **यक़ीन नहीं,** (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा) **यक़ीन क्यों न होता लेकिन इस वास्ते चाहता हूं कि दिल को तसल्ली** (और सकून) **हो जाए,** (अल्लाह तआ़ला ने) **कहा कि आप चार परिन्दे पकड़** (कर पाल) **लें फिर उन को** (पास रख कर) **हिला लें** (कि वो ऐसे हिल जाएं कि बुलाने से आ जाया करें और उन की पहचान भी हो जाए कि यह शक न रहे कि शायद कोई दूसरा परिन्दा आगया हो फिर उन चारों को ज़बह करके और हड्डियों व परों समीत उन का क़ीमा करके उस के कई हिस्से करदें और) **फिर अलग-अलग पहाड़ों पर उस का एक-एक हिस्सा रखदें फिर उन को बुलाएं** (तो वो अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से ज़िन्दा हो कर) **आप के पास दौड़े-दौड़े चले आएंगे, और जान लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं हिकमत वाले हैं** (उन को यह काम कुछ मुश्किल नहीं)**(260)**।

नोटः- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ऐसा ही किया फिर उन परिन्दों को पुकारा तो सब अपनी असली सूरत में ज़िन्दा हो कर दौड़ते हुए इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास आ गये। अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ऐ इब्राहीम क़ियामत के दिन इसी तरह सब को ज़िन्दा कर दूंगा।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ
وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ
اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ
مَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿۲۶۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ
بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ
عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶۴﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ ۢ بِرَبْوَةٍ

اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتۡ اُكُلَهَا ضِعۡفَيۡنِ ۚ فَاِنۡ لَّمۡ يُصِبۡهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿۲۶۵﴾ اَيَوَدُّ
اَحَدُكُمۡ اَنۡ تَكُوۡنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّ اَعۡنَابٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۙ لَهٗ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَ
اَصَابَهُ الۡكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَآ اِعۡصَارٌ فِيۡهِ نَارٌ فَاحۡتَرَقَتۡ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الۡاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمۡ تَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۲۶۶﴾ ع

आयत न० 261 से 266

जो लोग अल्लाह की राह में अपने माल ख़र्च करते हैं उन की मिसाल ऐसी है (जैसे कोई आदमी) **एक दाना** (गेहूँ का अच्छी ज़मीन में बोए उस दाने से गेहूँ का एक पौधा निकले) **जिस में सात बालें** (गेहूँ की) **पैदा हों और हर बाल में सौ दाने हों** (जिस का मतलब यह हुआ कि एक दाने से सात सौ दाने पैदा हुए यानी अल्लाह की राह में ख़र्च करने का सवाब एक से लेकर सात सौ तक पहुंचता है), **और अल्लाह तआ़ला बढ़ाते हैं जिस के वास्ते चाहें, और अल्लाह बहुत देने वाले और सब कुछ जानने वाले हैं(261) जो लोग अल्लाह के रास्ते में अपने माल ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद न अहसान जिताते हैं और न उन को** (जिन को दिया है कुछ कह कर) **तकलीफ़ पहुंचाते हैं उन का सवाब उनके रब के पास है, न उन पर** (आगे के लिए) **कोई ख़तरा है और न** (बीते हुए का) **कुछ ग़म(262)** (मांगने वाले को) **नर्म बात कह कर टाल देना बहुत अच्छा है ऐसी ख़ैरात** (देने) **से जिसमें देने के बाद** (मांगने वाले को बुरा भला कह कर) **तकलीफ़ पहुंचाई जाए, और अल्लाह** (तो ख़ुद) **मालदार** (और) **सहार वाले हैं** (उन को किसी के माल की ज़रूरत नहीं जो ख़र्च करता है अपने नफ़े के लिए करता है)**(263) ऐ ईमान वालो अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो** (ज़बान से) **अहसान जिता कर और तकलीफ़ पहुंचा कर उस आदमी की तरह जो लोगों के दिखावे** (और नाम) **के वास्ते माल ख़र्च करता है और अल्लाह तआ़ला और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखता, उस की मिसाल ऐसी है, जैसे किसी साफ़ पत्थर पर मिट्टी जम जाए** (और उसमें कोई दाना बोए) **फिर उस पर ज़ोर की बारिश पड़ जाए और वो उस** (मिट्टी) **को** (बहा कर पत्थर को) **बिल्कुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई ज़रा हाथ न लगेगी** (यानी ईमान न होने की सूरत में या दिखावे के लिए किया हुआ नेक काम बर्बाद जाता है)**, और अल्लाह तआ़ला काफ़िर लोगों को रास्ता न दिखाएंगे(264) और जो लोग अपने माल ख़ालिस अल्लाह को ख़ुश करने की नीयत से ख़र्च करते हैं अपने जी में पक्का इरादा करके उन की मिसाल ऐसी है जैसे कोई बाग़ हो किसी टीले पर और उस पर**

ज़ोर की बारिश पड़ी हो फिर वो अपना फल दो गुना लाया हो, और अगर ऐसी ज़ोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी उस के लिए काफ़ी हैं, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को अच्छी तरह देखते जानते हैं (मतलब यह कि नेक नीयत और इख़लास के साथ थोड़ा भी ख़र्च किया जाए तो वो भी काफ़ी है)(265) **क्या तुम में से किसी को यह बात पसन्द है कि उस का एक बाग़ हो खुजूर और अंगूरों का उस के नीचे नहरें बहती हों और उस आदमी के बाग में** (और भी) **हर क़िस्म के फल हों और उस आदमी का बुढ़ापा आ गया हो और उसके बीवी बच्चे** (ऐसे) **हों जिन में** (काम संभालने की) **ताक़त नहीं, ऐसी हालत में उस बाग़ पर एक बगोला आए जिसमें आग हो फिर वो बाग़ जल जाए, अल्लाह तआला इसी तरह मिसालें बयान करते हैं तुम्हारे लिए ताकि तुम सोचा करो** (यानी जिस सदक़े ख़ैरात में सही शर्तें न पाई जाएं उस के लिए आख़रत में पछतावे के सिवा कुछ हाथ न लगेगा)(266)

नोटः- जो माल अल्लाह की राह में ख़र्च किया वो हलाल हो, सुन्नत तरीक़े पर ख़र्च किया गया हो, सही जगह ख़र्च किया गया हो, ख़ैरात देकर अहसान न जिताए न कोई ऐसी बात कहे कि उन का दिल दुखे जिन को माल दिया गया और जो कुछ ख़र्च करे नीयत के इख़लास के साथ यानी सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करना हो न दिखावा हो न नामवरी हो।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَ مِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَ لَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ
مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَ لَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾ اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ
الْفَقْرَ وَ يَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَ اللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَ مَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَ مَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾ وَ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ
اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾ اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَ اِنْ
تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ يُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾
لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا
ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ۫ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ

بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

आयत न० 267 से 274

ऐ ईमान वालो ख़र्च करो (अल्लाह की राह में) अच्छी चीज़ें अपनी कमाई में से और उस चीज़ में से जो कि हमने पैदा किया तुम्हारे वास्ते ज़मीन में से, और ख़राब चीज़ों में से ख़र्च करने का इरादा न करो जब कि (अगर कोई तुम को देना चाहे तो) तुम (ख़ुद) उन को लेना पसन्द न करोगे मगर नागवारी से (लेलो तो और बात है), और जान लो कि अल्लाह तआ़ला (ख़ुद) मालदार हैं (तुम्हारे माल के मुहताज नहीं और) तारीफ़ों वाले हैं(267) शैतान तुम को (अल्लाह की राह में ख़र्च करने में) ग़रीबी से डराता है और बेशर्मी की बातें सिखाता है, और अल्लाह तआ़ला वादा करते हैं तुम से बख़्शिश और अपनी महरबानी का, और अल्लाह तआ़ला भरपूर ख़ज़ाने वाले (और) सब कुछ जानने वाले हैं(268) (वो) जिस को चाहते हैं दीन की समझ दे देते हैं और जिस को दीन की समझ मिली उस को बड़ी भलाई मिल गई, और नसीहत वो लोग ही माना करते हैं जो समझदार हैं(269) और जो ख़ैरात तुम करोगे (अल्लाह की राह में) या कोई मन्नत मानोगे तो बेशक अल्लाह तआ़ला को सब पता है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं(270) अगर दिखाकर दो ख़ैरात तो यह भी ठीक है, और अगर उस को छुपाओ और ग़रीबों को पहुंचाओ तो वो तुम्हारे हक़ में बहुत अच्छा है, और (इसकी बरकत से) तुम्हारे कुछ गुनाह मुआफ़ होंगे, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को अच्छी तरह जानते हैं(271) (और) इन (काफ़िरों) को सीधे रास्ते पर लाना (ऐ पैग़म्बर) आप की ज़िम्मेदारी नहीं और अल्लाह तआ़ला जिस को चाहें सीधा रास्ता दिखा देते हैं, और जो कुछ ख़ैरात तुम करोगे सो अपने ही वास्ते ख़र्च करोगे जब तक कि ख़र्च करोगे अल्लाह को ख़ुश करने के लिए, और जो कुछ ख़ैरात करोगे तो उस का सवाब तुम को पूरा मिलेगा और तुम्हारे हक़ में कमी न की जाएगी(272) (और यह) ख़ैरात उन ग़रीबों का हक़ है जो अल्लाह की राह में रूके हुए हैं (यानी उस की इबादत में लगे रहते हैं और कमाने के लिए) मुल्क में चल फिर नहीं सकते, और अन्जान लोग उन को मालदार समझते हैं उन के न मांगने की वजह से, आप उन को उन के चेहरों (पर भूक की निशानी) से पहचान सकते हैं, (वो) लोगों से लिपट लिपट कर नहीं मांगते, और जो कुछ ख़र्च करोगे (अल्लाह की राह में) अच्छी चीज़ उस को बेशक

अल्लाह जानते हैं(273) (और) **जो लोग ख़र्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में** (यानी दीन के कामों में) **रात को और दिन में** (यानी किसी भी वक़्त) **छुपा कर** (लोगों से) **और खुले में** (यानी जैसा मौक़ा हो) **तो उन के लिए** (बड़ा) **सवाब है उन के रब के पास और न** (आख़रत में) **उन को कोई ख़तरा है और न उन को कोई ग़म होगा**(274)

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا
اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَ اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا
سَلَفَ ؕ وَ اَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَ يُرْبِي
الصَّدَقٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ ذَرُوْا مَا بَقِيَ
مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ۚ وَ اِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ
رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾ وَ اِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَ اَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۫ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا
يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ ع

आयत न० 275 से 281

जो लोग सूद खाते हैं (यानी लेते हैं वो क़ियामत में) **क़ब्रों से इस तरह खड़े होंगे जिस तरह खड़ा होता है ऐसा आदमी जिस को शैतान ने लिपट कर पागल बना दिया हो,** (और) **यह** (सज़ा) **इसलिए** (होगी) **कि उन** (सूद खाने वाले) **लोगों ने** (सूद को हलाल साबित करने के लिए) **कहा था कि तिजारत** (यानी कारोबार) **भी तो सूद की तरह है** (क्योंकि तिजारत भी तो नफ़े के लिए की जाती है और तिजारत हलाल है तो सूद भी हलाल होना चाहिए), **जब कि** (दोनों में खुला फ़र्क़ है) **अल्लाह तआला ने** (जो कि मालिक हैं हुक्मों के) **तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम कर दिया है** (इससे ज़्यादा और क्या फ़र्क़ होगा), **फिर जिस आदमी को उस के रब की तरफ़ से** (इस बारे में) **नसीहत पहुंची और वो** (सूद लेने और कुफ़्र की बात यानी सूद को हलाल कहने से) **रूक गया** (यानी हराम समझने लगा और लेना भी छोड़ दिया) **तो जो कुछ** (इस हुक्म के आने से) **पहले** (लेना) **हो चुका है वो उस का रहा** (यानी तौबा क़ुबूल हुई और लिया हुआ माल

उसी का है), **और** (दिल का) **मुआमला उस का अल्लाह के हवाले रहा** (कि दिल से तौबा की है या दिखावे की), **और जो आदमी फिर पलट जाए तो ये लोग दोज़ख़ में जाएंगे** (और कुफ़्र की बात कहने की वजह से) **वो उस** (दोज़ख़) **में सदा रहेंगे**(275) (और सूद लेने से आज माल बढ़ता दिखाई देता है लेकिन अन्जामकार) **अल्लाह तआला सूद को मिटाते हैं** (कभी तो दुनिया ही में सब बर्बाद हो जाता है वर्ना आख़रत में तो ज़रूर बर्बाद है क्योंकि वहां इस पर अज़ाब होगा) **और** (सदक़ा ख़ैरात देने में माल घटता दिखाई देता है लेकिन अन्जामकार अल्लाह तआला) **सदक़ों को बढ़ाते हैं** (कभी तो दुनिया में भी वर्ना आख़रत में तो ज़रूर बढ़ाते हैं क्योंकि वहां इस पर बहुत सवाब मिलेगा), **और अल्लाह तआला पसन्द नहीं करते** (बल्कि नापसन्द करते हैं) **किसी कुफ़्र करने वाले को** (जो कुफ़्र की बात मुंह से निकाले और इसी तरह पसन्द नहीं करते) **किसी गुनाह के काम करने वाले को** (जो कि सूद जैसे बड़े गुनाहों के काम करता हो)(276) **बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये और नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात देते रहे उनके लिए सवाब है उन का अपने रब के पास, और** (आख़रत में) **न उन को डर होगा ओर न** (कोई) **ग़म होगा**(277) **ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो कुछ बाक़ी रह गया है सूद अगर तुम मुसलमान हो**(278) **फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जंग का ऐलान सुन लो, और अगर तुम ने** (सूद से) **तौबा कर ली तो तुम को तुम्हारा असल माल मिल जाएगा न तुम** (ज़्यादा वसूल करके) **किसी पर ज़ुल्म करने पाओगे और न कोई** (तुम्हारे असल माल में कमी करके) **तुम पर ज़ुल्म करने पाएगा**(279) **और अगर तुम्हारा क़र्ज़दार ग़रीब हो** (तुम्हारा क़र्ज़ अदा करने की हिम्मत न रखता हो) **तो** (उस को अदा करने की) **गुन्जाइश होने तक मोहलत दे देनी चाहिए, और अगर तुम उस को** (अपना क़र्ज़) **मुआफ़ ही कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है अगर तुम** (इस बात को) **समझो**(280) **और डरते रहो उस दिन से जिस में तुम सब अल्लाह के सामने पेश किये जाओगे, फिर हर आदमी को अपने-अपने किये का पूरा-पूरा बदला मिलेगा और उन के साथ नाइन्साफ़ी न होगी**(281)

नोटः- जब सूद हराम हुआ तो सब से पहले हज़रत अब्बास की तरफ़ से सूद मुआफ़ किया गया जो बहुत बड़ी दौलत थी जो ग़ैर मुस्लिमों के ज़िम्मे थी।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۭ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۠ وَ
لَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ
مِنْهُ شَيْـــًٔا ۭ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ
بِالْعَدْلِ ۭ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ
مِنَ الشُّهَدَاۗءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۭ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۗءُ اِذَا مَا دُعُوْا ۭ وَلَا تَسْـــَٔـمُوْٓا
اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ
تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا
يُضَاۗرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ڛ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۲۸۲
وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰي سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ۭ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ
اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ۭ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۭ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۲۸۳ ع

आयत न० 282 से 283

ऐ ईमान वालो जब तुम आपस में उधार का लेन देन करो किसी ख़ास मुद्दत के लिए तो उस को लिख लिया करो, और चाहिए कि तुम में से कोई लिखने (पढ़ने) **वाला इन्साफ़ के साथ लिख दे** (यानी किसी की तरफ़दारी न करे), **और लिखने वाला** (इस को) **लिखने से मना न करे जैसा कि उस को अल्लाह तआ़ला ने लिखना** (पढ़ना) **सिखाया है तो उस को चाहिए कि** (जब ज़रूरत पड़े) **लिख दिया करे, और** (इस इक़रार नामे की बातें) **वो आदमी लिखाए कि जिस के ज़िम्मे क़र्ज़ है और अल्लाह से डरता रहे जो उस का रब है और इसके लिखवाने में कोई कमी न करे, फिर अगर वो आदमी जिस के ऊपर क़र्ज़ है कम समझ है या बूढ़ा है या** (किसी और वजह से) **आप नहीं लिखा सकता तो** (उस की तरफ़ से) **उस का वकील** (या वारिस) **ठीक-ठीक लिखवा दे, और** (लिखने के साथ-साथ इसके लिए) **अपने में से दो मर्द गवाह** (भी) **कर लो, और अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें गवाह हों उन लोगों में से जिन को तुम पसन्द करते हो** (यानी नेक लोगों में से, और एक मर्द की जगह दो औ़रतें इस लिए) **ताकि अगर एक भूल जाए तो दूसरी याद दिलादे, और गवाह** (आने से) **मना न करें जिस वक़्त** (उन को गवाही के लिए) **बुलाया जाए, और लिखने में सुस्ती न करो** (चाहे) **मुआ़मला**

छोटा हो या बड़ा उस की मुद्दत पूरी होने तक, इस (लिख लेने) में पूरा इन्साफ़ है अल्लाह के नज़दीक और यह गवाही को ठीक रखने वाला है और शक (शुबह) से बचाने वाला है हां जो सौदा आपस में नक़्द लेन देन का हो तो उस को अगर न लिक्खो तो कोई हरज नहीं, और (इसमें भी) गवाह कर लिया करो जब तुम सौदा करो, और किसी लिखने वाले या गवाही देने वाले को तकलीफ़ न पहुंचाई जाए, और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात है, और अल्लाह से डरते रहो, और अल्लाह तुम को सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानता है(282) और अगर तुम सफ़र में हो (और वहां क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आए) और कोई लिखने वाला न मिले तो (ज़मानत में कोई चीज़) गिरवी रख दें (इस की इजाज़त है), फिर जो गिरवी रक्खे दूसरे की अमानत को तो (अपना क़र्ज़ वसूल होने पर) उस की अमानत अदा करे जैसा कि उस पर ऐतबार किया गया और डरता रहे अल्लाह से जो रब है उसका, और मत छुपाओ गवाही को, और जो आदमी उस को छुपाए तो बेशक उस का दिल गुनाहगार है, और अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों को अच्छी तरह जानते हैं(283)।

नोटः- कोई चीज़ गिरवी रख कर उधार देने वाले को गिरवी (रहन) रक्खी हुई चीज़ से कोई फ़ाइदा उठाना जाइज़ नहीं क़र्ज़ अदा होने तक सिर्फ़ उस चीज़ पर क़ब्ज़ा रक्खे।

لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ یُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَیَغْفِرُ لِمَنْ
یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۲۸۴ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ
كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۗ
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ۲۸۵ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا
تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا
تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ اعْفُ عَنَّا ۫ وَ اغْفِرْ لَنَا ۫ وَ ارْحَمْنَا ۫ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ۲۸۶ ع

आयत न० 284 से 286

अल्लाह तआला ही का है जो कुछ कि आसमानों और ज़मीन में है, और खोल दोगे अपने जी की बात या छुपाओगे उस को (वो सब जानते हैं) अल्लाह उस का तुम से (क़ियामत में) हिसाब ले लेंगे, फिर जिस को चाहेंगे (यानी मुआफ़ी के क़ाबिल समझेंगे) मुआफ़ कर देंगे और

जिस को चाहेंगे (यानी मुआफ़ी के क़ाबिल न देखेंगे) **सज़ा देंगे, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं** (उन के लिए दिलों की बात जान लेना कुछ मुश्किल नहीं)(284) **ईमान रखते हैं रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **उस चीज़ पर जो उन के पास उन के रब की तरफ़ से उतरी है और** (उन के साथ) **मुसलमान भी,** (ये) **सब ईमान लाए अल्लाह पर** (उस की सब ख़ूबियों के साथ) **और उस के फ़रिशतों** (के मौजूद होने) **पर और उस की किताबों** (के सच्ची होने) **पर और उसके सब रसूलों** (के सच्चा होने) **पर, और कोई फ़र्क़ नहीं करते उसके पैग़म्बरों में** (कि किसी को मानें किसी को न मानें जैसा कि यहूदियों व ईसाइयों ने किया), **और कहते हैं कि हम ने** (आप का हुक्म) **सुना और मान लिया** (और आप का कहा मानने में जो कमी रह जाए उस की) **आप से मुआफ़ी चाहते हैं या रब हमारे और** (हम सब को) **आप के पास ही लौट कर जाना है**(285) (और) **अल्लाह तआला किसी आदमी को उस की ताक़त से ज़्यादा काम का हुक्म नहीं देते, इन्सान को सवाब भी उसी का मिलता है जो उस ने** (इरादे से) **किया और अज़ाब भी उस काम पर होता है जो उस ने** (इरादे से) **किया** (यानी दिल में ऐसे ही वसवसा आ जाने से पकड़ नहीं होती), **ऐ** (मुसलमानो अल्लाह से यह दुआ किया करो कि) **हमारे रब हमारी भूल चूक पर पकड़ न कीजिए या रब हमारे हम पर भारी और सख़्त कामों का बोझ न डालिए जैसा हम से पहले लोगों** (बनी इस्राईल) **पर डाला गया, या रब हमारे और हम पर ऐसे हुक्म जारी न कीजिए जिन की हम ताक़त नहीं रखते, और हम को मुआफ़ कर दीजिए और हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम कीजिए आप ही हमारे रब हैं बस काफ़िरों के मुक़ाबिले हमारी मदद कीजिए**(286)।

3-सूरत आले इमरान

इस मदनी सूरत में 20 रूकू और 200 आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۝١ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۝٢ نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَ اَنْزَلَ
التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِیْلَ ۝٣ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ اَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِیْدٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝٤ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰى عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ ۝٥ هُوَ الَّذِیْ
یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ یَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝٦ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ
اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ
ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَ مَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ؔ ۘ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ
مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٧

आयत न० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं** (और वो सदा) **ज़िन्दा** (और बाक़ी रहने वाले) **हैं सब चीज़ों के संभालने वाले हैं(02) अल्लाह तआ़ला ने आप के पास क़ुरआन भेजा है सच्चाई के साथ जो तस्दीक़ करता है अपने से पहली** (आसमानी) **किताबों की और इसी तरह भेजा था तौरेत और इन्जील को(03) इस के पहले लोगों की हिदायत के वास्ते** (और साबित हुआ कि क़ुरआन हिदायत है) **और अल्लाह तआ़ला ने** (नबियो की सच्चाई के सबूत के लिए) **मोजिज़े भेजे, बेशक जो लोग इनकार करने वाले हैं अल्लाह तआ़ला की** (उन) **आयतों का** (जो तौहीद का सबूत हैं) **उनके लिए सख़्त सज़ा है, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (ताक़त और क़ुदरत) **वाले** (और बुराई का) **बदला लेने वाले हैं(04) बेशक अल्लाह तआ़ला से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है** (न कोई चीज़) **ज़मीन में और न** (कोई चीज़) **आसमान में(05) वो ऐसी** (पाक) **ज़ात है कि मां के पेट में तुम्हारी सूरत** (शकल) **बनाते हैं जिस तरह चाहते हैं,** (बस साबित हुआ कि) **कोई**

इबादत के क़ाबिल नहीं सिवाए उस (पाक ज़ात) **के** (और) **वो ज़बरदस्त** (हैं तौहीद का इनकार करने वालों से बदला ले सकते) **हैं** (लेकिन) **हिकमत वाले** (भी) **हैं** (कि किसी वजह से दुनिया में ढील दे रक्खी है)**(06) वो** (अल्लाह तआ़ला) **ऐसे हैं जिन्होंने तुम पर किताब उतारी जिसमें का एक हिस्सा वो आयतें है जो कि मुहकमात हैं** (यानी उन का मतलब साफ़ है) **और ये आयतें ही असली मदार हैं** (इस) **किताब** (यानी क़ुरआन) **का और दूसरी आयतें मुताशाबिहात हैं** (यानी उन का मतलब साफ़ नहीं बल्कि उन का मतलब मुहकमात के वास्ते से जानने की कोशिश की जाती है)**, सो जिन के दिलों में बुराई है वो तो उसके उसी हिस्से के पीछे हो लेते हैं जो मुताशाबिहात में से है** (दीन में) **गुमराही फैलाने के लिए और इस** (मुताशाबिहात हिस्से) **के** (ग़लत) **मतलब तलाश करने के लिए** (ताकि अपने ग़लत अक़ीदे में इससे मतलब निकालें)**, जब कि इस का** (सही) **मतलब सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई और नहीं जानता** (या वो क़ुरआन व हदीस के वास्ते से साफ़ या इशारे से कुछ बतलादें तो बस उतना ही पता चल सकता है ज़्यादा नहीं)**, और** (इसीलिए) **जो लोग** (दीन के) **इल्म में माहिर** (और समझदार) **हैं वो** (ऐसी आयतों के बारे में) **यह कहते हैं कि हम इस पर यक़ीन रखते हैं कि सब** (आयतें साफ़ मतलब वाली भी और छुपे मतलब वाली भी) **हमारे रब की तरफ़ से हैं** (बस उन का जो कुछ मतलब व माइने हों वो सही हैं) **और नसीहत** (की बातों को) **वो लोग ही माना करते हैं जो कि समझदार हैं** (यानी समझदारी यह है कि काम की बात में लगे और नुक़सान की बातों में न लगे)**(07)।**

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۸﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ
النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَآ
اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿۱۰﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۱﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَ تُحْشَرُوْنَ اِلٰى
جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾

आयत न० 08 से 12

ऐ (मुसलमानों इस तरह दुआ़ मांगो कि या) **हमारे रब हमारे दिलों को न फेरना बाद इसके कि आप हम को** (सीधा) **रास्ता दिखा चुके हैं और हम को अपने पास से** (ख़ास) **रहमत दीजिए** (कि सीधे रास्ते पर रहें) **बेशक आप बहुत ज़्यादा देने वाले हैं(08) या रब हमारे बेशक**

आप तमाम लोगों को जमा करने वाले हैं उस दिन जिस (के आने) **में ज़रा शक नहीं** (यानी क़ियामत के दिन में और शक न होने की वजह यह है कि उसके आने का अल्लाह तआ़ला ने वादा किया हुआ है, और) **बेशक अल्लाह तआ़ला वादे के ख़िलाफ़ नहीं करते** (इसलिए क़ियामत का आना ज़रूरी है और इस लिए हम को इस की फ़िक्र है)**(09) बेशक जो लोग कुफ़्र करते हैं हरगिज़ काम नहीं आ सकते उनके माल** (दौलत) **और न उन की औलाद अल्लाह तआ़ला के मुक़ाबिले में ज़रा भी, और ऐसे लोग दोज़ख़ का ईंधन होंगे(10)** (उन लोगों का हाल ऐसा है) **जैसा हाल था फिरऔ़न वालों का और उन से पहले वाले** (काफ़िर) **लोगों का, कि उन्होंने हमारी आयतों को** (यानी ख़बरों और हुक्मों को) **झूटा बताया इस पर अल्लाह तआ़ला ने उन की पकड़ की उन के गुनाहों की वजह से, और अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं(11)** (और) **इन कुफ़्र करने वाले लोगों से** (यह भी कह दीजिए) **कि** (तुम यह न समझना कि यह पकड़ सिर्फ़ आख़रत में होगी बल्कि यहां और वहां दोनों जगह बस दुनिया में) **जल्दी ही तुम** (मुसलमानों के हाथों) **हराए जाओगे और** (आख़रत में) **दोज़ख़ की तरफ़ जमा करके ले जाए जाओगे, और** (दोज़ख़) **बुरा ठिकाना है(12)।**

नोटः- यहां सारी दुनिया के काफ़िर मुराद नहीं है बल्कि ख़ास उसी वक़्त और उसी जगह के काफ़िर मुराद हैं जिन से बद्र की जंग में मुक़ाबिला हुआ था जौ कि आगे आता है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ اُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ
الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿۱۳﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ
مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِيْنَ وَ الْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَ الْفِضَّةِ وَ الْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ وَ
الْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ
اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۱۵﴾ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَ
الصّٰدِقِيْنَ وَ الْقٰنِتِيْنَ وَ الْمُنْفِقِيْنَ وَ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾

आयत न० 13 से 17

बेशक तुम्हारे (सबूत के) **लिए बड़ी निशानी है दो फ़ौजों** (के क़िस्से) **में जो कि आपस में**

(बद्र की लड़ाई में) **एक दूसरे से टकराई थीं, एक फ़ौज तो अल्लाह की राह में लड़ती थी** (यानी मुसलमान जो सामान और गिनती में बहुत कम थे) **और दूसरी फ़ौज काफ़िर लोग थे** (और काफ़िर इतने ज़्यादा थे कि) **अपने आप को खुली आंखों** (मुसलमानों से) **कई गुना** (ज़्यादा) **देख रहे थे** (फिर भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जीत दी), **और** (जीत हार देना अल्लाह ही के हाथ में है) **अल्लाह तआला अपनी मदद से जिस को चाहते हैं हावी कर देते हैं,** (सो) **बेशक इस** (क़िस्से) **में बड़ी सीख** (और निशानी) **है देखने** (यानी समझने) **वालों के लिए(13) अच्छी लगती है** (अक्सर) **लोगों को मुहब्बत पसन्द चीज़ों की** (जैसे) **औरतें हुईं बेटे हुए लगे ढ़ेर हुए सोने और चान्दी के निशान लगे हुए घोड़े हुए** (या दूसरे) **जानवर हुए और खेती हुई,** (लेकिन) **ये सब दुनिया की ज़िन्दगी में काम आने वाली चीज़ें हैं और सदा रहने वाली भलाई** (की चीज़) **तो अल्लाह ही के पास** (है जो मौत के बाद काम आएगी जिसके बारे में आगे आता) **है(14) आप** (इन लोगों से यह) **कह दीजिए क्या मैं तुम को ऐसी चीज़ बता दूं जो इन** (बताई हुई) **चीज़ों से** (बहुत ज़्यादा) **अच्छी हो,** (तो सुनो) **ऐसे लोगों के लिए जो** (अल्लाह तआला से) **डरते हैं उनके** (सच्चे) **मालिक के पास ऐसे बाग हैं** (यानी जन्नत) **जिन के नीचे नहरें बहती हैं उन** (जन्नतों) **में सदा-सदा को रहेंगे** (और उनके लिए) **ऐसी बीवियां हैं जो** (हर तरह से) **पाक साफ़ हैं और अल्लाह तआला उन से राज़ी, और** (डरने वालो के लिए ये नेमतें इस लिए कि) **अल्लाह तआला अच्छी तरह देखते** (भालते) **हैं बन्दों** (के हाल) **को(15)** (और ये डरने वाले) **ऐसे लोग** (हैं) **जो कहते हैं कि या रब हमारे हम ईमान ले आए सो आप हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिए और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लीजिए(16)** (और वो लोग) **बड़े सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं और** (अल्लाह तआला के) **ताबेदार हैं और** (नेक कामों में माल के) **ख़र्च करने वाले हैं और अख़ीर रात में** (उठ-उठ कर) **गुनाहों की मुआफ़ी चाहने वाले हैं(17)।**

नोटः- दुनिया की ये सब रौनक़ें इन्सान को आज़माने के लिए हैं कि कौन अपने असली मालिक को याद रखता है और नेक काम करता है और कौन इनके चक्कर में पड़ कर अपने मालिक को भूल जाता है और गुनाहों में पड़ जाता है।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰۤىِٕكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَاۤىِٕمًاۢ بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٨
اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹﴾

आयत न० 18 से 19

गवाही दी है अल्लाह ने (आसमानी किताबों में) **इस** (बात) **की कि सिवाए उस** (पाक) **ज़ात के कोई माबूद होने के लाइक़ नहीं और फ़रिशतों ने भी** (अपनी तस्बीह में इस की गवाही दी है) **और** (दूसरे) **इल्म वालों ने भी** (अपनी किताबों व बयानों में इस की गवाही दी है) **और** (माबूद भी वो इस शान के हैं कि हर चीज़ का) **ठीक-ठीक इन्तिज़ाम रखने वाले हैं,** (और फिर कहा जाता है कि) **उनके सिवा कोई माबूद होने के लाइक़ नहीं वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं हिकमत वाले हैं** (18) **बेशक** (सच्चा और पसन्द) **दीन अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है, और** (इसके सच्चा होने में) **किताब वालों ने जो मुख़ालफ़त की** (कि इस को झूटा कहा) **तो ऐसी हालत के बाद कि उन को** (इस्लाम के सच्चा होने का) **सबूत पहुंच चुका था सिर्फ़ एक दूसरे से बढ़ने की वजह से** (और बड़ा बनने की वजह से इस्लाम को क़ुबूल नहीं किया बल्कि उल्टा उस को झूटा बताने लगे), **और जो आदमी अल्लाह तआला के हुक्मों का इनकार करेगा** (जैसा उन लोगों ने किया) **तो बेशक अल्लाह तआला बहुत जल्द उस का हिसाब लेने वाले हैं** (और अन्जाम ऐसे आदमी का अज़ाब होगा)(19)।

नोटः- आख़रत में सिर्फ़ उसी की नेकियों को तौला जाएगा जो दुनिया में इस्लाम पर रहा हो इस्लाम पर न होने की सूरत में किये हुए नेक कामों पर कोई सवाब न होगा।

فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ
اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا
نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۪ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَكَيْفَ اِذَا
جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۫ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾

आयत न० 20 से 25

(इस्लाम के सच्चा साबित हो जाने के बाद) **अगर ये लोग आप से** (बेबात की) **बहस करें तो** (ऐ पैगम्बर) **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि** (तुम मानो या न मानो) **मैं तो अपना मुंह ख़ास अल्लाह की तरफ़ कर चुका और जो मेरे पीछे चलने वाले हैं** (यानी मुसलमान) **वो भी** (अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ कर चुके यानी हम सब इस्लाम ले आए), **और** (इस जवाब के बाद) **कहिए** (यानी पूछिए) **किताब वालों से और अरब के अनपढ़** (मुशरिक) **लोगों से कि क्या तुम भी इस्लाम लाते हो, तो अगर वो लोग इस्लाम ले आएं तो वो लोग भी** (सीधी) **राह पर आ जाएंगे, और अगर वो लोग** (इससे इसी तरह) **मुंह फेरे रक्खें तो** (आप इस का भी गम न कीजिए क्योंकि) **आप के ज़िम्मे सिर्फ़** (अल्लाह के हुक्मों का) **पहुंचा देना है, और** (आगे) **अल्लाह तआ़ला ख़ुद देख** (और समझ) **लेंगे** (अपने) **बन्दों को** (आप से कोई पूछ ताछ नहीं है)(20) **बेशक जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआ़ला की आयतों के साथ** (जैसे यहूदी कि इंजील और क़ुरआन को नहीं मानते थे) **और क़त्ल करते हैं पैग़म्बरों को** (और वो क़त्ल उन के नज़दीक भी) **नाहक़** (और ग़लत होता है) **और** (ऐसे ही) **क़त्ल करते हैं ऐसे लोगों को जो अच्छी बातें सिखाते हैं तो ऐसे लोगों को एक दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए(21)** (और) **ये वो लोग हैं कि** (इन जुर्मों की वजह से) **उनके सब** (नेक) **काम बर्बाद हो गये दुनिया में** (भी) **और आख़रत में** (भी), **और** (सज़ा के वक़्त) **उन का कोई हिमायत करने वाला** (मददगार) **न होगा(22)** (ऐ पैग़म्बर) **क्या आप ने ऐसे लोग नहीं देखे जिन को** (आसमानी) **किताब** (यानी तौरेत) **का एक** (बड़ा) **हिस्सा दिया गया** (कि अगर हिदायत के चाहने वाले होते तो उन के लिए वो काफ़ी था) **और इस अल्लाह की किताब की तरफ़ इसी लिए उन को बुलाया भी जाता है कि वो उन के बीच** (मज़हब के झगड़े का) **फ़ैसला कर दे फिर** (भी) **उनमें से कुछ लोग मुंह फेरते हैं बेपरवाई करते हुए(23)** (और) **यह** (बेपरवाई) **इस वजह से है कि वो लोग यह कहते हैं** (और ये ही उन का ऐतक़ाद है) **कि हम को सिर्फ़ गिनती के थोड़े दिनों तक दोज़ख़ की आग लगेगी** (फिर मुआ़फ़ी हो जाएगी), **और उन को धोके में डाल रक्खा है उन की घड़ी हुई बातों ने** (जैसे यह धोका कि हम नबी की औलाद हैं इस लिए हमारी बख़्शिश ज़रूर हो जाएगी)**(24) सो** (इन कुफ़्र की बातों की वजह से) **उन का क्या** (बुरा) **हाल होगा जब कि हम उन को उस दिन में जमा कर लेंगे जिस** (के आने) **में ज़रा शक नहीं, और** (उस दिन हर आदमी को) **अपने किये का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और ना इन्साफ़ी** (न होगी यानी बेक़ुसूर या क़ुसूर से ज़्यादा सज़ा) **न होगी(25)।**

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ
تَشَآءُ ؕ بِیَدِكَ الْخَیْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ۫ وَ تُخْرِجُ
الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ ۫ وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾ لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ
اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ فِیْ شَیْءٍ اِلَّاۤ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ وَ
یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اِلَی اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸﴾ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ یَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا
فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ یَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَیْرٍ مُّحْضَرًا ۛۚ وَّ
مَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۛۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَیْنَهَا وَ بَیْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِیْدًا ؕ وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾

आयत न० 26 से 30

नोटः- जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर जब मुसलमान बचाव के लिए खाई खोद रहे थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईरान जीतने की ख़ुशख़बरी सुनाई तो मुनाफ़िक़ों ने हंसी उड़ाई कि अपने बचाव के लिए तो खाई खोदनी पड़ रही है ईरान जीतेंगे तो उस पर ये आयतें उतरीं और बाद में ईरान जीता गया इन आयतों में दुआ मांगने का तरीक़ा भी सिखाया गया है।

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (दुआ में) **यह कहिए कि या अल्लाह मालिक तमाम मुल्क के आप मुल्क** (का जितना हिस्सा चाहें) **जिस को चाहें दे देते हैं और जिस** (के क़ब्ज़े) **से चाहें मुल्क** (का हिस्सा) **ले लेते हैं, और जिस को आप चाहते हैं** (जीत देकर) **इज़्ज़त दे देते हैं और जिस को चाहें** (हार देकर) **ज़लील कर देते हैं, आप ही के हाथ में है सब भलाई, बेशक आप हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं(26) आप** (कुछ मौसमों में) **रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में मिला देते हैं** (जिससे दिन बड़ा होने लगता है) **और** (कुछ मौसमो में) **दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में मिला देते हैं** (जिससे रात बढ़ने लगती है)**, और आप जानदार चीज़ को बेजान से निकाल लेते हैं** (जैसे अन्डे से बच्चा) **और बेजान चीज़ को जानदार से निकाल लेते हैं** (जैसे परिन्दे से अन्डा) **और आप जिस को चाहते हैं बेहिसाब रोज़ी दे देते हैं(27) मुसलमानों को चाहिए कि** (खुले या चोरी छुपे दुशमन) **काफ़िरों को दोस्त न बनाऐं मुसलमानों** (की दोस्ती) **से बढ़ कर** (मगर इन्सानियत के नाते उनके साथ भलाई करने में हरज नहीं, दोस्ती से मना किया जाता है ताकि इधर के राज़ उधर न पहुचें) **और जो आदमी ऐसा** (काम) **करेगा तो अल्लाह से उस का कोई वास्ता**

नहीं (क्योंकि जिन दो आदमियों में आपस में दुशमनी हो उनमें से एक से दोस्ती करके दूसरे से दोस्ती का दावा करना ऐतबार के क़ाबिल नहीं) **मगर ऐसी सूरत में** (मेल रखने की इजाज़त है) **कि तुम उन से किसी क़िस्म का** (बड़ा) **ख़तरा रखते हो** (वहां नुक़सान से बचने की ज़रूरत है), **और अल्लाह तआ़ला तुम को अपनी** (आलीशान) **ज़ात से डराते हैं** (कि उससे डर कर उस के हुक्मों के ख़िलाफ़ मत करो), **और अल्लह ही की तरफ़ लौट कर जाना** (है उस वक़्त की सज़ा से डरना ज़रूरी) **है** (28) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि अगर तुम** (दिल ही दिल में) **छुपा रक्खोगे अपने मन की बात या उस को खोल दोगे अल्लाह तआ़ला उस को** (हर हाल में) **जानते हैं, और** (इसी की क्या ख़ास बात है) **वो तो सब कुछ जानते हैं जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है** (कोई चीज़ उन से छुपी नहीं), **और अल्लह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत भी पूरी रखते** (हैं सो अगर तुम खुले या छुपे बुरा काम करोगे तो वो तुम को सज़ा दे सकते) **हैं**(29) **जिस दिन** (ऐसा होगा) **कि हर आदमी अपने अच्छे किये हुए कामों को सामने लाया हुआ पाएगा और अपने बुरे किये हुए कामों को** (भी सामने पाएगा उस दिन) **इस बात की तमन्ना करेगा कि क्या अच्छा होता जो उस आदमी के और उस दिन के बीच बड़ी दूरी होती** (ताकि अपने बुरे कामों को न देखना पड़ता), **और** (तुम से फिर कहा जाता है कि) **अल्लाह तआ़ला तुम को अपनी** (आलीशान) **ज़ात से डराते हैं,** (और यह डराना इस वजह से है कि) **अल्लाह तआ़ला बहुत मेहरबान हैं** (अपने) **बन्दों** (के हाल) **पर** (इसलिए चाहते हैं कि ये डर कर बुराई से रूकें और आख़रत की सज़ा से बचें)(30)

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ أَطِيعُوا
اللّٰهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾

आयत न० 31 से 32

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (लोगों से) **कह दीजिए कि अगर तुम** (अपनी सोच में) **अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत रखते हो** (और यह भी चाहते हो कि अल्लाह तआ़ला भी तुम से मुहब्बत करें) **तो तुम लोग** (इसके लिए) **मेरे तरीक़े पर चलो** (क्योंकि मैं ये ही सिखाने के लिए भेजा गया हूं, जब ऐसा करोगे तो) **अल्लाह तआ़ला तुम से मुहब्बत करने लगेंगे और तुम्हारे सब गुनाहों को मुआ़फ़ कर देंगे, और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले और बड़े महरबान हैं**(31) (और) **आप यह** (भी) **कह दीजिए कि तुम कहना मानो अल्लाह तआ़ला का** (कि असल तो वो ही है) **और**

(कहना मानो) **रसूल का** (अल्लाह का रसूल होने की वजह से), **फिर** (इस पर भी) **अगर वो लोग** (आप को मानने से) **मुंह फेरें तो** (वो लोग सुन लें कि) **अल्लाह तआ़ला काफ़िरों से मुहब्बत नहीं करते**(32)।

नोटः- इससे मालूम हुआ कि रसूल को न मानना भी कुफ़्र है। एक हदीस में है कि जिस ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का कहना माना उसने असल में अल्लाह का कहना माना और जिस ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफ़रमानी की उस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की। (तफ़सीर मज़हरी)

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىٓ اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۳﴾ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَ اللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۴﴾ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَ لَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْاُنْثٰى ۚ وَ اِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَ اِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَ ذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿۳۶﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا
بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّ اَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّ كَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا
رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

आयत न० 33 से 37

बेशक अल्लाह तआ़ला ने (पैग़म्बरी के लिए) **चुना** (हज़रत) **आदम** (अलैहिस्सलाम) **और** (हज़रत) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **को और** (हज़रत) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम व उन) **की औलाद** (में से कुछ) **को** (जैसे हज़रत इस्माईल व हज़रत इसहाक़ अलैहिमुस्सलाम और बनी इस्राईल में से होने वाले सभी पैग़म्बर और हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इस्माईल की औलाद में से हैं) **और इमरान की औलाद** (में से कुछ) **को** (इसमें हज़रत मूसा व हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम आगये यानी इन हज़रात को पैग़म्बरी के लिए) **तमाम दुनिया** (के लोगों) **पर** (चुना गया)(33) **कुछ उनमें कुछ की औलाद** (हैं जैसे आदम अलैहिस्सलाम की औलाद सब हैं इसी तरह नूह अलैहिस्सलाम की औलाद सब) **हैं, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाले ख़ूब जानने वाले** (हैं बस जिस को पैग़म्बरी के क़ाबिल समझा पैग़म्बर बना दिया क्योंकि वो सब की बात सुनते हैं सब का हाल जानते) **हैं**(34) (और वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि** (मरयम अलैहिस्सलाम के बाप) **इमरान की बीवी ने** (पेट में बच्चा होने की

हालत में अल्लाह तआ़ला से) **दुआ़ की कि या रब मेरे मैंने मन्नत मानी है आप** (की इबादत) **के लिए इस बच्चे की जो मेरे पेट में है कि वो** (अल्लाह के घर की ख़िदमत के वास्ते) **आज़ाद रक्खा जाएगा** (और मैं उस को अपने काम में न लाउंगी) **सो आप** (इस को) **मुझ से कुबूल कर लीजिए, बेशक आप ख़ूब सुनने वाले ख़ूब जानने वाले** (हैं कि मेरी दुआ़ को सुन रहे हैं और मेरी नीयत को जान रहे) **हैं(35) फिर जब** (उनके) **लड़की पैदा हुई** (तो उन को दुख हुआ कि यह तो बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लाइक़ नहीं यह काम तो मर्दों का है इस लिए दुखी हो कर) **कहने लगीं कि या रब मेरे यह तो मेरे लड़की पैदा हुई,** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि वो अपनी सोच में दुखी थी) **जबकि अल्लाह तआ़ला ज़्यादा जानते हैं उस** (लड़की की शान) **को जो उस के यहां पैदा हुई, और** (किसी तरह भी) **वो लड़का** (जो उन्होंने चाहा था) **उस लड़की के बराबर नहीं** (हो सकता था बल्कि यह लड़की ही बेहतर है, आगे वो बीबी कहती हैं) **और मैंने इस लड़की का नाम मरयम रक्खा और मैं इस को और इसकी औलाद को** (अगर कभी औलाद हो) **आप की पनाह** (और हिफ़ाज़त) **में देती हूं शैतान मरदूद से(36) बस उन मरयम** (अलैहिस्सलाम) **को उनके रब ने अच्छे तरीक़े से कुबूल किया और अच्छे तरीक़े से परवान चढ़ाया और** (हज़रत) **ज़िकरिया** (अ़लैहिस्सलाम) **को उन का ज़िम्मेदार बनाया, जब कभी** (हज़रत) **ज़िकरिया** (अ़लैहिस्सलाम) **उन के पास** (उसी) **अच्छे मकान में** (जिसमें उन को रक्खा गया था) **आते तो उन के पास खाने पीने की चीज़ें पाते,** (और) **यह कहते कि ऐ मरयम ये चीज़ें तुम्हारे लिए कहां से आईं** (जब कि मकान पर ताला है बाहर से कोई आ जा नहीं सकता)**, वो कहतीं कि अल्लाह तआ़ला के पास** (जो छुपा खज़ाना है उसमें) **से आईं, बेशक अल्लाह तआ़ला जिस को चाहते हैं बेहिसाब रोज़ी दे देते** (हैं जैसे इस मौक़े पर सिर्फ़ अपनी महरबानी से बेमेहनत देदी) **हैं(37)।**

नोटः- पहले नबियों की शरीअत में एक तरीक़ा इबादत का यह भी था कि अपनी औलाद में से किसी बच्चे को अल्लाह के लिए ख़ास करदें कि उससे दुनिया का कोई काम न लें।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّىْ فِى الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّ حَصُوْرًا
وَّ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّ قَدْ بَلَغَنِىَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِىْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۴۰﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ

رَبَّكَ كَثِيرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝٤١

आयत न० 38 से 41

नोटः- हज़रत ज़िकरिया अलैहिस्सलाम के कोई औलाद नहीं थी और उन को बुढ़ापा आ गया था जब हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम को पालते हुए अजीब निशानियां देखीं तो अपने लिए भी दुआ की।

इस मौक़े पर दुआ की (हज़रत) **ज़िकरिया** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने रब से, कहा कि मेरे रब दीजिए मुझ को ख़ास अपने पास से कोई अच्छी औलाद, बेशक आप बहुत सुनने वाले हैं दुआ के(38) बस पुकार कर कहा उन से फ़रिशतों ने जब कि वो इबादत की जगह में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तआला आप को ख़ुशख़बरी देते हैं याहया** (नाम का बेटा होने) **की जो ऐसे होंगे कि वो** (हज़रत) **ईसा** (अलैहिस्सलाम की पैग़म्बरी) **की तस्दीक़ करने वाले होंगे और** (दूसरे वो दीन के) **सरदार होंगे और** (तीसरे) **अपने जी को** (चाहतों से) **बहुत रोकने वाले होंगे और** (चौथे) **नबी भी होंगे और** (पांचवे) **ऊंचे दर्जे के नेक लोगों में से होंगे(39)** (हज़रत) **ज़िकरिया** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह तआला से) **कहा कि या मेरे रब मेरे यहां लड़का किस तरह होगा जबकि मुझ को बुढ़ापा आ पहुंचा और मेरी बीवी भी** (बुढ़ापे की वजह से) **बच्चा जनने के क़ाबिल नहीं है, अल्लाह तआला ने जवाब दिया कि ऐसी हालत में ही लड़का हो जाएगा क्योंकि अल्लाह तआला जो कुछ इरादा करें कर देते हैं(40) उन्होंने कहा या रब** (तो फिर) **मेरे वास्ते कोई निशानी रख दीजिए** (जिस से मुझको पता चल जाए कि अब बच्चा रह गया), **अल्लाह तआला ने कहा कि तुम्हारी निशानी यह है कि तुम लोगों से तीन दिन तक बातें न कर सकोगे सिवाए** (हाथ या सर के) **इशारे के** (जब यह निशानी देखो तो समझना घर में उम्मीद है), **और** (उन दिनों में भी अल्लाह का नाम लेने की ताक़त रहेगी सो) **अपने रब को** (दिल से भी) **बहुत याद करते रहना और** (ज़बान से भी) **तस्बीह पढ़ते रहना शाम को भी और सुबह को भी(41)।**

नोटः- हज़रत ज़िकरिया अलैहिस्सलाम का यह सवाल कि बुढ़ापे में बच्चा कैसे होगा किसी शक की वजह से नहीं बल्कि यह जानना था कि बुढ़ापा ऐसे ही रहेगा या कुछ बदलाव होगा तो बताया गया कि तुम बूढ़े ही रहोगे और तुम्हारे औलाद होगी।

وَ اِذۡ قَالَتِ الۡمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرۡيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصۡطَفٰكِ وَ طَهَّرَكِ وَ اصۡطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۴۲﴾ يٰمَرۡيَمُ اقۡنُتِىۡ
لِرَبِّكِ وَاسۡجُدِىۡ وَارۡكَعِىۡ مَعَ الرّٰكِعِيۡنَ ﴿۴۳﴾

आयत न० 42 से 43

और (उस वक़्त की बात सुनो) **जब कि फ़रिशतों ने** (हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम से) **कहा कि ऐ मरयम बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुम को चुन लिया** (यानी क़ुबूल कर लिया है) **और** (सभी नापसन्द बातों से) **पाक बनाया है और** (इस ज़माने की) **सारी दुनिया की औरतों के मुक़ाबिले में चुन लिया है(42)** (और फ़रिशतों ने यह भी कहा कि) **ऐ मरयम ताबेदारी करती रहो अपने रब की और सजदा** (यानी नमाज़ अदा) **किया करो और** (नमाज़ में) **रूकू** (भी) **किया करो उन लोगों के साथ जो रूकू करने वाले हैं(43)।**

नोटः- कुछ लोग रूकू में पूरा नहीं झुकते यहां बता दिया गया कि पूरा रूकू करने वाले की तरह रूकू करना चाहिए।

ذٰلِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَيۡبِ نُوۡحِيۡهِ اِلَيۡكَ‌ؕ وَمَا كُنۡتَ لَدَيۡهِمۡ اِذۡ يُلۡقُوۡنَ اَقۡلَامَهُمۡ اَيُّهُمۡ يَكۡفُلُ مَرۡيَمَ ۖ وَمَا
كُنۡتَ لَدَيۡهِمۡ اِذۡ يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿۴۴﴾ اِذۡ قَالَتِ الۡمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرۡيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنۡهُ ۖ اسۡمُهُ الۡمَسِيۡحُ
عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ وَجِيۡهًا فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ وَمِنَ الۡمُقَرَّبِيۡنَ ۙ﴿۴۵﴾ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الۡمَهۡدِ وَكَهۡلًا وَّمِنَ
الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۴۶﴾

आयत न० 44 से 46

ये क़िस्से (जो ऊपर बयान हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास इन के पता करने का कोई वास्ता न था इसलिए) **ग़ैब की ख़बरों में से हैं जिन की हम आप के पास वही भेजते** (हैं जिस के वास्ते से आप ये ख़बरें पता करके दूसरों को बताते) **हैं, और** (जो लोग हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम को अपने पास रखने के लिए झगड़ रहे थे जिस का अख़ीर में लाटरी डालने पर फ़ैसला हुआ था) **आप उन लोगों के पास न तो उस वक़्त मौजूद थे जब कि वो** (नाम निकालने के लिए) **अपने क़लमों को** (पानी में) **डालते थे** (और सूरत नाम निकलने की यह तय पाई थी कि जिस का क़लम पानी के बहाव के ख़िलाफ़ उल्टा बह जाए वो पालने का हक़दार समझा जाए तो इससे यह बात तय करनी थी) **कि उन सब में कौन आदमी** (हज़रत) **मरयम** (अलैहिस्सलाम) **को पाले,** (बस

न तो उस वक़्त मौजूद थे) **और न आप उनके पास उस वक़्त मौजूद थे जब कि वो लोग** (नाम निकलने से पहले इस बारे में) **आपस में बहस करते थे** (और किसी दूसरे तरीक़े से आप को इन बातों का पता न चल पाना सब जानते हैं बस ऐसी हालत में ये ग़ैब की ख़बरें आप के नबी होने की निशानी हैं)(44) **जब फ़रिशतों ने** (हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम से यह भी) **कहा कि ऐ मरयम बेशक अल्लाह तआ़ला तुम को ख़ुशख़बरी देते हैं एक कलिमा की** (पैदाइश की) **जो अल्लाह की तरफ़ से होगा** (यानी एक बच्च पैदा होगा जो बिना बाप का होने की वजह से कलिमतुल्लाह कहलाएगा) **उस का नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा** (वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक) **आबरू वाले होंगे दुनिया में** (भी उन को नबी बनाया जाएगा) **और आख़रत में** (भी अपनी उम्मत के मोमिनों की सिफ़ारिश करेंगे) **और** (अल्लाह तआ़ला के) **ख़ास दोस्तों में से होंगे**(45) **और** (मोजिज़े वाले भी होंगे) **लोगों से** (दोनों हालत में बराबर) **बात करेंगे पालने में** (यानी बिल्कुल बचपन में भी) **और बड़ी उम्र में** (भी दोनों बातों में फ़र्क़ न होगा) **और** (ऊंचे दर्जे के) **नेक लोगों में से होंगे**(46)

नोटः- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दुशमनों से बचाने के लिए जवानी में ही आसमान पर उठा लिया गया था फिर क़ियामत के नज़दीक ज़मीन पर उतारे जाएंगे इस तरह बड़ी उम्र में बात करना भी एक मोजिज़ा होगा जैसे पालने में बात करना एक मोजिज़ा है।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّ لَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا
يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٤٧ وَ يُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ ۝٤٨ۚ وَ رَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ
اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَ مَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ
بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٤٩ۚ وَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ لِاُحِلَّ
لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝٥٠ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٥١

आयत न० 47 से 51

(हज़रत) **मरयम** (अलैहिस्सलाम) **बोलीं या रब मेरे किस तरह होगा मेरे बच्चा जब कि किसी मर्द ने मुझ को** (मिलाप के लिए) **हाथ** (भी) **नहीं लगाया** (और बच्चा बिना मर्द के पैदा होता

नहीं तो ऐसा क्योंकर होगा या मुझ को निकाह का हुक्म किया जाएगा), **अल्लाह तआ़ला ने** (जवाब में फ़रिशतों के वास्ते से) **कहा ऐसे ही** (बिना मर्द के) **होगा** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला जो चाहे पैदा कर देते हैं** (यानी किसी चीज़ के पैदा होने के लिए सिर्फ़ उन का चाहना काफ़ी है किसी वास्ते की उन को ज़रूरत नहीं, और चाहने का तरीक़ा यह है कि) **जब किसी चीज़ को पूरा करना चाहते हैं तो उस को कह देते हैं कि** (मौजूद) **होजा बस वो चीज़** (मौजूद) **हो जाती है(47) और** (ऐ मरयम इस मुबारक बच्चे की ये ख़ास बातें होंगी कि) **अल्लाह तआ़ला उन को सिखाएंगे** (आसमानी) **किताबें और समझ की बातें और** (ख़ास कर) **तौरेत और इन्जील(48) और उन को बनी इस्राईल की तरफ़** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजेंगे** (और वो कहेंगे) **मैं तुम लोगों के पास** (अपनी पैग़म्बरी पर) **तुम्हारे रब की तरफ़ से काफ़ी सबूत लेकर आया हूं वो यह है कि मैं तुम लोगों के** (यक़ीन लाने के) **लिए गारे से परिन्दे जैसी शकल बनाता हूं फिर उस** (बनाई हुई शकल यानी मूर्ति) **के अन्दर फूंक मार देता हूं जिस से वो** (सच मुच का जानदार) **परिन्दा बन जाता है अल्लाह के हुक्म से** (एक मोजिज़ा तो यह हुआ), **और मैं अच्छा कर देता हूं जन्म के अन्धे को और कोढ़ी को और ज़िन्दा कर देता हूं मुर्दों को अल्लाह के हुक्म से** (यह दूसरा व तीसरा मुजिज़ा हुआ), **और मैं तुम को बता देता हूं जो कुछ अपने घरों में खा**(खा कर आ)**ते हो और जो** (घरों में) **रख आते हो** (यह चौथा मोजिज़ा हुआ), **बेशक इन** (बताए मोजिज़ों) **में** (मेरे नबी होने की) **काफ़ी दलील है तुम लोगों के लिए अगर तुम ईमान लाना चाहो(49) और मैं** (इसलिए आया हूं कि) **तसदीक़ करता हूं उस किताब की जो मुझ से पहले** (उतारी गई) **थी यानी तौरेत की और** (इसलिए आया हूं कि) **तुम लोगों के लिए कुछ ऐसी चीज़ें हलाल कर दूं जो** (मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअ़त में) **तुम पर हराम कर दी गईं थीं** (सो उन का हराम होना मेरी शरीअ़त में उठ जाएगा) **और** (मेरा यह काम बिना दलील नहीं बल्कि मैं साबित कर चुका हूं कि) **मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से** (पैग़म्बरी की) **दलील लेकर आया हूं, बस तुम लोग अल्लाह तआ़ला** (के हुक्मों के ख़िलाफ़ करने) **से डरो और** (दीन के बारे में) **मेरा कहना मानो(50)** (और मेरी दीनी तालीम का सार यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला मेरे भी रब हैं और तुम्हारे भी रब हैं तो तुम लोग उस** (रब) **की इबादत करो बस ये ही** (दीन का) **सीधा रास्ता है** (जिस पर चल कर बख़्शिश होती है)(51)।

नोटः- परिन्दे की शकल बनाना उस शरीअ़त में जाइज़ था हमारी शरीअ़त में मना है।

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَ
اشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَ مَكَرُوْا وَ مَكَرَ
اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ
جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾

आयत न० 52 से 55

(इन सब सबूतों के बावजूद भी बनी इस्राईल ने आप की पैग़म्बरी का इनकार किया) **तो जब** (हज़रत) **ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **ने उन से इनकार देखा** (और इनकार के साथ सताने वाले भी और मौक़े से उन्हें कुछ ऐसे लोग मिले जो हवारीयीन कहलाते थे) **तो** (उन से) **आपने कहा कोई ऐसे आदमी भी हैं जो** (सच्चे दीन में उन दुशमनों के मुक़ाबिले) **मेरे मददगार हो जाएं अल्लाह के वास्ते** (जिससे दीन के काम में मुझे कोई तकलीफ़ न पहुंचाए), **हवारीयीन बोले कि हम हैं मददगार अल्लाह के** (दीन के), **हम अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए** (आपके कहने पर), **और आप इस बात के गवाह रहिए कि हम** (अल्लाह तआ़ला के और आपके) **ताबेदार हैं**(52) (फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की) **या रब हमारे हम ईमान लाए उन** (हुक्मों) **पर जो आपने उतारे और हुक्म माना हम ने** (इन) **रसूल का सो** (हमारा ईमान क़ुबूल करके) **हम को उन लोगों के साथ लिख लीजिए जो** (दीन की) **गवाही देने वाले हैं** (यानी सच्चे मोमिनों में हमारी भी गिनती कर लीजिए)(53) **और उन लोगों ने** (जो कि बनी इस्राईल में से आप के नबी होने का इनकार करने वाले और सताने वाले थे आप को मारने के लिए) **चाल चली** (बहाने से आप को पकड़ कर फ़ांसी देने के लिए तैयार हो गये) **और अल्लाह तआ़ला ने** (आप को बचाने के लिए) **दांव किया** (जिस का उन लोगों को पता भी न चला कि उन्हीं दुशमनों में से एक आदमी को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शकल पर बना दिया और ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया जिससे वो तो बच गये और हम शकल फांसी दिया गया और उन लोगों को इस का पता तक भी न हो सका), **और अल्लाह तआ़ला सब दांव चलने वालों से अच्छे हैं**(54) **जब अल्लाह तआ़ला ने** (हज़रत ईसा को गरिफ़तारी के वक़्त परीशान देखा तो) **कहा कि ऐ ईसा** (कुछ ग़म न करो) **बेशक मैं तुम को** (अपने वक़्त पर) **मौत देने वाला हूं** (बस इन दुशमनों के हाथों फ़ांसी पर जान देने से बचे रहोगे) **और** (अब तो) **मैं तुम को** (सही

सलामत) **अपनी तरफ़** (यानी आसमान की तरफ़) **उठाए लेता हूं और तुम को उन लोगों** (के इल्ज़ाम) **से पाक करने वाला हूं जो** (तुम्हारा) **इनकार करते हैं और जो लोग तुम्हारा कहना मानने वाले हैं उन को कामयाब करने वाला हूं उन लोगों पर जो कि** (तुम्हारा) **इनकार करने वाले हैं क़ियामत के दिन तक** (चाहे इस वक़्त ये दुशमन हावी हों मगर ज़लील रहेंगे), **फिर** (जब क़ियामत आजाएगी उस वक़्त) **मेरी तरफ़ होगी सब की वापसी तो मैं** (उस वक़्त) **तुम्हारे** (सबके) **बीच** (खुला) **फ़ैसला कर दूंगा उन सब बातों में जिन में तुम आपस में झगड़ा करते थे** (और उन बातों में हज़रत ईसा का मुक़द्दमा भी है)(55)।

नोटः- हज़रत ईसा को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया गया फिर क़ियामत के नज़दीक दोबारा दुनिया में आएंगे और फिर अपने वक़्त पर मौत पाएंगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से उन सब इल्ज़ामों से पाक कर दिया गया जो यहूदी उनके बारे में और उन की मां के बारे में कहते थे और आप के दुशमनों को दुनिया में भी रूसवाई हुई और आख़रत में भी रूसवा होंगे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۷﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيْمِ ﴿۵۸﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۵۹﴾ اَلْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ
اَبْنَآءَكُمْ وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ ۫ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۲﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۳﴾ ع

आयत न० 56 से 63

तो (फ़ैसला यह है कि) **जो लोग** (इन झगड़ने वालों में) **काफ़िर थे उन को** (उनके कुफ़्र पर) **सख़्त सज़ा दूंगा दुनिया में भी** (कि वो तो हो चुकी) **और आख़रत में भी** (कि वो बाक़ी रही), **और उन लोगों का कोई हिमायती** (मददगार) **न होगा(56) और जो लोग मोमिन थे और उन्होंने नेक काम किये थे तो उन को अल्लाह तआला उनके** (ईमान और नेक कामों के) **सवाब देंगे, और** (काफ़िरों को सज़ा मिलने की वजह यह है कि) **अल्लाह तआला मुहब्बत नहीं रखते** (ऐसे)

ज़ुल्म करने वालों से (जो अल्लाह तआला या पैग़म्बरों का इनकार करें और यह बड़ा ज़ुल्म है मुआफ़ी के क़ाबिल नहीं)(57) **यह** (क़िस्सा) **हम तुम को** (वही के वास्ते से) **पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं जो कि** (आपकी पैग़म्बरी के) **सबूतों में से है और नसीहत की बातों में से है**(58) **बेशक** (हज़रत) **ईसा** (अलैहिस्सलाम) **की मिसाल अल्लाह तआला के नज़दीक ऐसी है जैसे** (हज़रत) **आदम** (अलैहिस्सलाम) **की मिसाल, कि उन** (आदम अलैहिस्सलाम की शकल) **को** (अल्लाह ने) **मिट्टी से बनाया फिर उन** (की शकल) **को हुक्म दिया कि** (जानदार) **होजा बस वो** (जानदार) **हो गये** (आदम अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने बिना मां बाप के पैदा किया और ईसा अ़लैहिस्सलाम को बिना बाप के पैदा किया)(59) **यह सच्ची बात** (जो ऊपर बताई गई) **आप के रब की तरफ़ से है सो आप शक करने वालों में से न हो जाइये**(60) **बस जो आप से ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **के बारे में** (अब भी) **बहस करे आप के पास** (सही) **इल्म आने के बाद तो आप** (जवाब में यह) **कह दीजिए कि** (अच्छा अगर दलील से नहीं मानते तो फिर) **आ जाओ हम** (और तुम) **बुला** (कर जमा कर) **लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और खुद अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को फिर हम** (सब मिलकर) **मुबाहिला करें** (यानी सच्चे दिल से दुआ़ करें) **इस तरह कि अल्लाह की लानत भेजें उन पर जो** (इस बहस में) **ग़लती पर हों** (यानी झूटों पर खुदा का ग़ज़ब पड़े)(61) **बेशक यह** (जो कुछ) **बयान** (हुआ) **वो ही सच है और कोई माबूद होने के लाइक़ नहीं सिवाए अल्लाह तआ़ला के, बेशक अल्लाह तआ़ला ही ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हिकमत वाले हैं**(62) **फिर** (इन सब सबूतों के बाद भी) **अगर** (सच्चाई) **क़ुबूल करने से मुंह मोड़ें तो** (आप उन का मुआ़मला अल्लाह के हवाले कीजिए क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला फ़साद करने वालों को अच्छी तरह जानते हैं**(63)।

नोटः- मुबाहिला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से नजरान के ईसाइयों के सामने पेश किया गया था जिसमें वो डर कर पीछे हट गये थे अगर मुबाहिला कर लेते तो सब हलाक हो जाते।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّ لَا يَتَّخِذَ
بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ
تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ مَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَ الْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۵﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ

حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّ لَا نَصْرَانِيًّا وَّ لٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾
اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَ هٰذَا النَّبِيُّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

आयत न० 64 से 68

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप कह दीजिए कि ऐ किताब वालो आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो कि हमारे और तुम्हारे बीच** (मुस्लिम होने में) **बराबर है** (वो) **यह** (है) **कि सिवाए अल्लाह तआ़ला के हम किसी और की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को साझी न करें और हम में से कोई किसी दूसरे को रब न बनाए अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर, फिर अगर** (इसके बाद भी) **वो लोग** (सच्चाई से) **मुंह मोड़ें तो तुम** (मुसलमान) **लोग कह दो कि तुम हमारी इस** (बात) **के गवाह रहो कि हम तो** (इस बात के) **मानने वाले हैं** (अगर तुम न मानो तो तुम जानो)(64) **ऐ किताब वालो तुम क्यों बहस करते हो** (हज़रत) **इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **के बारे में** (कि वो यहूदी या ईसाई थे) **जब कि तौरेत और इन्जील उन के** (ज़माने के बहुत) **बाद उतारी गईं** (और ये दोनों तरीक़े उन किताबों के बहुत बाद वजूद में आए फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम इन तरीक़ों पर किस तरह हो सकते हैं), **क्या तुम को इतनी** (भी) **समझ नहीं**(65) **हां तुम ऐसे हो कि ऐसी बात में तो बहस करते ही थे जिस का तुम को कुछ पता था** (जैसे हज़रत ईसा के बारे में चाहे वो जानकारी अधूरी थी कि मोजिज़े को माबूद होने का सबूत समझ बैठे) **सो ऐसी बात में क्यों बहस करते हो जिस की तुम को असल में जानकारी नहीं, और अल्लाह तआ़ला** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े को अच्छी तरह) **जानते हैं और तुम नहीं जानते**(66) (और सुनो कि) **इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **न तो यहूदी थे और न ईसाई थे लेकिन सीधे रास्ते वाले** (यानी) **इस्लाम वाले थे, और मुशरिकों में से** (भी) **नहीं थे**(67) (सो यहूदियों व ईसाइयों से उन का मज़हबी रिशता नहीं है, हां) **बेशक सब लोगों में ज़्यादा नज़दीकी** (हज़रत) **इब्राहीम के वो लोग थे जिन्होंने** (उनके वक़्त में) **उन का कहना माना और ये नबी** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं) **और ये ईमान वाले** (जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत है), **और अल्लाह तआ़ला ईमान वालों के रखवाले** (हैं कि उन को उन के ईमान का सवाब देने वाले) **हैं**(68)

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ
اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا
اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰۤى اَحَدٌ
مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

आयत न० 69 से 74

(मुसलमानो) **दिल से चाहते हैं कुछ लोग किताब वालों में से इस बात को कि तुम को** (सच्चे दीन से) **गुमराह करदें, और गुमराह नहीं कर सकते मगर ख़ुद अपने आप को** (गुमराही व मुसीबत में धकेल रहे हैं) **और** (वो) **इस** (बात) **की ख़बर नहीं रखते(69) ऐ किताब वालो क्यों कुफ़्र करते हो अल्लाह तआ़ला की** (उन) **आयतों के साथ** (जो तौरेत और इन्जील में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने का सबूत हैं क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने का इनकार करना उन आयतों को झूटा बताना है जो कुफ़्र है) **जब कि तुम क़ुबूल करते हो** (कि वो आयतें अल्लाह की तरफ़ से हैं)**(70) ऐ किताब वालो क्यों मिलाते हो सच में झूट को और** (क्यों) **छुपाते हो सच बात को जब कि तुम जानते हो** (कि सच बात छुपा रहे हो यानी यह तो और भी बुरा है)(71) **और किताब वालों में से कुछ लोगों ने** (आपस में मशवरा करके) **कहा कि** (मुसलमानो को गुमराह करने का एक तरीक़ा यह है कि दिखावे को) **ईमान ले आओ इस** (किताब) **पर जो उतारी गई है** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से) **मुसलमानों पर** (यानी कुरआन पर) **शुरू दिन में** (यानी सुबह के वक़्त) **और** (फिर) **इनकार कर दो आख़ीर दिन में** (यानी शाम को) **शायद** (इस चालाकी से क़ुरआन और इस्लाम के बारे में शक में पड़ कर) **वो** (अपने दीन इस्लाम से) **फिर जाएं** (और यह सोचें कि जब ये इल्म वाले फिर गये तो ज़रूर इन को इस में कुछ कमी दिखाई दी होगी)(72) **और** (आपस में यह भी कहा कि मुसलमानों को दिखावे के लिए ईमान लाना और सच्चे दिल से) **किसी के सामने** (दीन) **क़ुबूल मत करना मगर ऐसे आदमी के सामने जो तुम्हारे दीन पर चलता हो** (उसके सामने अपने पुराने दीन का इक़रार सच्चे दिल से करना और मुसलमानों के सामने दिखावे को मुसलमान बने रहना, अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि ऐ नबी)

आप कह दीजिए कि (इन चालाकियों से कुछ नहीं होता क्योंकि) **बेशक** (बन्दों को) **जो हिदायत** (होती) **है वो हिदायत अल्लाह की** (तरफ़ से होती) **है** (बस जिस को अल्लाह हिदायत पर रखना चाहे उसे कोई बिचला नहीं सकता और) **तुम ऐसी बातें इस ज़िद में करते हो कि किसी और को भी ऐसी चीज़ मिल रही है जैसी तुम को मिली थी** (यानी किताब और आसमानी दीन) **या वो दूसरे लोग तुम पर हावी हो जाएं** (इस सच्चे दीन के बारे में जो) **तुम्हारे रब के नज़दीक** (हक़ है, यानी तुम मुसलमानों से जलते हो कि उन को आसमानी किताब क्यों मिल गई इस लिए मुख़ालफ़त करते हो, ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि बेशक बड़ाई** (और महरबानी) **तो अल्लाह के क़ब्ज़े में है वो जिसे चाहे देदें, और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाले हैं** (उनके यहां महरबानी की कमी नहीं) **और ख़ूब जानने वाले** (हैं कि किस वक़्त किस को देना ठीक है जानते) **हैं**(73) **इसलिए चुन लेते हैं अपनी रहमत** (व महरबानी) **के साथ जिस को चाहें, और अल्लाह तआ़ला बड़ी महरबानी वाले हैं** (बस इस वक़्त मुसलमानों पर महरबानी की तो इसमें जलने की क्या बात है)(74)।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا
دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ
يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧٦ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ
اَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا
يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٧٧

आयत न० 75 से 77

और किताब वालों में से ऐसा आदमी (भी) **है कि अगर तुम उस के पास बहुत सा माल भी अमानत रख दो तो** (वो मांगने के साथ ही) **उस को तुम्हारे पास ला रक्खे, और उन्हीं में से कुछ वो लोग हैं कि अगर तुम उनके पास एक दीनार** (एक रूपया) **भी अमानत रख दो तो वो भी तुम को अदा न करें** (बल्कि अमानत रखने से भी इन्कार करदें) **मगर जब तक कि तुम** (अमानत रख कर) **उसके सर पर** (बराबर) **खड़े रहो** (उस वक़्त तो इनकार न करे और जहां अलग हुए फिर अदा करना तो क्या अमानत ही से इनकार हो जाए), **यह** (अमानत का अदा न करना) **इस वजह से है कि वो लोग कहते हैं कि हम पर किताब वालों के सिवाए दूसरों के** (माल के) **बारे में किसी तरह का गुनाह नहीं** (यानी दूसरों का माल चुरा लेना या छीन

लेना सब जाइज़ है), **और वो लोग अल्लाह तआ़ला पर झूट लगाते हैं** (इस काम को जाइज़ कह कर) **और दिल में वो भी जानते** (हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इस को हलाल नहीं किया ये सिर्फ़ घड़ी हुई बातें) **हैं**(75) (धोका देने वाले को) **गुनाह क्यों न होगा** (ज़रूर होगा क्योंकि उसके बारे में हमारे ये दो क़ानून हैं एक यह कि) **जो आदमी अपने एहद को पूरा करे** (चाहे वो एहद यानी किया हुआ वादा अल्लाह तआ़ला से हो या किसी इन्सान से शरीअ़त की रू से किया हुआ जाइज़ एहद हो) **और अल्लाह तआ़ला से डरे तो बेशक अल्लाह तआ़ला मुहब्बत रखते हैं ऐसे परहेज़गारों से**(76) (और दूसरा क़ानून यह है कि) **बेशक जो लोग** (दुनिया का) **मोल ले लेते हैं बदले में उस एहद के जो** (उन्होंने) **अल्लाह तआ़ला से किया है** (जैसे नबियों पर ईमान लाना) **और अपनी क़समों के** (बदले में जैसे लोगों के हक़ के बारे में क़सम खा लेना) **उन लोगों को कुछ हिस्सा आख़िरत में** (वहां की नेमत का) **न मिलेगा और न अल्लाह तआ़ला उन से** (महरबानी से) **बात करेंगे और न उन की तरफ़** (मुहब्बत की नज़र से) **देखेंगे क़ियामत के दिन और न उन को** (गुनाहों से) **पाक करेंगे और उन के लिए दर्दनाक सज़ा होगी**(77)।

وَ اِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ وَ مَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ
الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ
تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَ لَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَ النَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ
بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

आयत न० 78 से 80

और बेशक इनमें से कुछ (लोग) **ऐसे हैं कि टेढ़ा करते हैं अपनी ज़बानों को किताब** (पढ़ने) **में** (यानी उन मे कोई लफ़्ज़ या मतलब ग़लत मिला देते हैं) **ताकि तुम लोग** (जो उस को सुनो तो) **उस** (मिलाई हुई चीज़) **को** (भी) **किताब का हिस्सा समझो जब कि वो किताब का हिससा नहीं, और** (धोका देने के लिए ज़बान से भी) **कहते हैं कि यह** (लफ़्ज़ या मतलब) **अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है जब कि वो** (किसी तरह भी) **अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नहीं है** (बस वो झूटे हैं), **और अल्लाह तआ़ला पर झूट बोलते हैं और वो** (अपना झूटा होना दिल में ख़ुद भी) **जानते हैं**(78) **किसी इन्सान का यह काम नहीं कि अल्लाह तआ़ला** (तो) **उस को**

किताब और (दीन की) **समझ और पैग़म्बरी दें** (जिनमें हर चीज़ शिर्क से रोकने वाली है और) **फिर वो लोगों से** (यूं) **कहने लगे कि मेरे बन्दे** (यानी मेरी इबादत करने वाले) **बन जाओ अल्लाह तआ़ला** (की तौहीद) **को छोड़ कर** (यानी पैग़म्बर शिर्क की बात नहीं सिखा सकता) **लेकिन** (वो नबी यह तो) **कहेगा कि तुम लोग अल्लाह वाले बन जाओ** (यानी सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की इबादत करो) **इस वजह से कि तुम** (अल्लाह की) **किताब** (दूसरों को भी) **सिखाते हो और इस वजह से कि** (ख़ुद भी इस को) **पढ़ते हो** (और इस किताब में तौहीद की बात सिखाई गई है)**(79) और न** (वो नबी) **यह बात बताएगा कि तुम फ़रिश्तों को और** (दूसरें) **नबियों को रब बना लो, क्या** (भला) **वो तुम को कुफ़्र की बात बताएगा बाद इसके कि तुम** (सचमुच या अपनी सोच में) **मुसलमान हो**(80)।

नोटः- कुछ यहूदियों व ईसाइयों ने कहा था कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क्या तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हारी इसी तरह पूजा करने लगें जैसे ईसाई हज़रत ईसा को पूजते हैं आप ने कहा अल्लाह की पनाह जो हम अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की इबादत करें या दूसरों को ऐसा करने के लिए कहें अल्लाह तआ़ला ने हम को इस काम के लिए नहीं भेजा। इस पर ये आयतें उतरीं इसमें ईसाइयों के उस दावे का ग़लत होना भी साबित हो गया जो वो कहते हैं कि ख़ुद हज़रत ईसा ने हमें सिखाया था कि उन को ख़ुदा मानें।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوْا وَ اَنَا
مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۱﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَ لَهٗٓ اَسْلَمَ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ مَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى
اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ وَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى وَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ مَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَ هُوَ فِي الْاٰخِرَةِ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

आयत न० 81 से 85

और (वो वक़्त भी याद करो) **जब कि अल्लाह तआ़ला ने एहद लिया** (नबियों से) **कि जो**

कुछ तुम को किताब और (शरीअ़त का) **इल्म दूं** (और) **फिर तुम्हारे पास कोई** (और) **पैग़म्बर आएं जो तस्दीक़ करने वाले** (और मुवाफ़िक़) **हों उस** (निशानी) **के जो तुम्हारे पास** (की किताब और शरीअ़त में) **है** (यानी शरीअ़त की रू से उस का रसूल होना साबित हो जाए) **तो तुम ज़रूर उस रसूल** (की पैग़म्बरी) **पर** (दिल से) **ईमान** (भी) **लाना और** (हाथ पांव से) **उस की मदद भी करना,** (फिर पूछा कि) **क्या तुम ने इक़रार किया और इस** (बात) **पर मेरा एहद लिया** (और हुक्म क़ुबूल किया), **वो बोले कि हमने इक़रार किया,** (अल्लाह तआ़ला ने) **कहा तो** (अपने इस इक़रार पर) **गवाह भी रहना** (क्योंकि गवाही से फिरने को हर आदमी बुरा समझता है) **और मैं** (भी) **इस** (बात) **पर तुम्हारे साथ गवाहों** (यानी ख़बर और इल्म रखने वालों) **में से हूं**(81) **सो जो आदमी** (उम्मतों में से) **फिरेगा** (इस एहद से) **बाद इस के** (कि नबियों तक से एहद लिया गया और उम्मतें तो किस गिनती में है) **तो ऐसे ही लोग** (पूरी) **नाफ़रमानी करने वाले** (यानी काफ़िर) **हैं**(82) **क्या** (दीन इस्लाम से फिर कर) **फिर अल्लाह के** (इस) **दीन के सिवा और किसी तरीक़े को चाहते हैं जब कि अल्लाह तआ़ला** (की यह शान है कि उन) **के हुक्म के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों में** (हैं) **और** (जितने) **ज़मीन में हैं** (कुछ) **ख़ुशी** (और मर्ज़ी से) **और** (कुछ) **मजबूरी से और** (पहली बात तो यह है कि उन की बड़ाई को जानते हुए कोई उन के एहद के ख़िलाफ़ ही न करे ख़ास कर जब कि सज़ा का भी डर हो क्योंकि) **सब अल्लाह ही की तरफ़** (क़ियामत के दिन) **लाए** (भी) **जाएंगे** (और उस वक़्त नाफ़रमानों को सज़ा होगी)(83) **आप** (ऐ मुहम्मद सल्ल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम दीन इस्लाम के बारे में यह) **कह दीजिए कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस** (हुक्म) **पर जो हम पर उतारा गया और उस** (हुक्म) **पर जो** (हज़रत) **इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक़ व याक़ूब** (अलैहिमुस्सलाम) **और याक़ूब** (अलैहिस्सलाम) **की औलाद** (में जो नबी हुए हैं उन) **की तरफ़ भेजा गया और उस** (हुक्म व मोजिज़े) **पर भी जो** (हज़रत) **मूसा व ईसा** (अ़लैहिमुस्सलाम) **और दूसरे नबियों को दिया गया उन के रब की तरफ़ से** (सो हम उन सब पर ईमान रखते हैं और ईमान भी ऐसा कि) **हम उन** (नबियों) **में से किसी एक में भी** (ईमान लाने के बारे में) **फ़र्क़ नहीं करते** (कि किसी पर ईमान रक्खें और किसी पर न रक्खें) **और हम तो अल्लाह ही के ताबेदार हैं** (उसने ही दीन हम को बताया हम ने क़ुबूल किया)(84) **और जो आदमी इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को अपनाना चाहेगा तो वो** (दीन) **उस** (आदमी) **से** (अल्लाह तआ़ला के नज़दीक) **क़ुबूल** (व मन्ज़ूर) **न होगा और** (वो आदमी) **आख़रत में नुक़सान उठाने वालों में होगा** (यानी बख़्शिश न होगी दोज़ख़ में जाएगा)(85)।

नोटः- सारे पैग़म्बरों का बुनियादी दीन इस्लाम ही है भले ही उनके ज़माने में शरीअ़त के कुछ हुक्म अलग-अलग रहे हों इस ज़माने में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लाया हुआ दीन ही इस्लाम है और क़ियामत तक ये ही दीन रहेगा।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۶﴾ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۷﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا ھُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۸۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُھُمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الضَّاۗلُّوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَھُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِھِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَھَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَھُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَھُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۹۱﴾

आयत न० 86 से 91

नोटः- कुछ लोग इस्लाम से फिर कर अपने को हिदायत पर समझते रहे और दावा करते कि अल्लाह तआ़ला ने अब हम को हिदायत की है। इस बुराई के बारे में कहते हैं कि भलाः-

अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को कैसे हिदायत करेंगे जो काफ़िर हो गये (दिल से) **ईमान लाने के बाद और** (ज़बान से) **यह गवाही देने के बाद कि रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रसूल होने के दावे में) **सच्चे हैं और इसके बाद कि उन को खुले सबूत** (इस्लाम की सच्चाई के) **पहुंच चुके थे, और अल्लाह तआ़ला ऐसे ना इन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं किया करते** (यानी कुफ़्र का बेढंगा रास्ता अल्लाह की हिदायत नहीं और ऐसे लोग बेशक गुमराह हैं)(86) **ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उन पर लानत होती है अल्लाह तआ़ला की भी और फ़रिशतों की भी और** (बहुत से) **इन्सानों की भी** (बस) **सब की(87)** (और फिर वो लानत भी ऐसी कि) **वो सदा-सदा को उसी** (लानत) **में रहेंगे** (यानी सदा दोज़ख़ में रहेंगे और) **उन पर से अ़ज़ाब हल्का भी न होने पाएगा और न** (दाख़िल होने से पहले) **उन को** (कोई) **मोहलत दी जाएगी(88) हां मगर जो लोग इस** (कुफ़्र) **के बाद तौबा करलें** (यानी मुसलमान हो जाएं) **और अपने** (दिल) **को** (भी) **संवारें** (यानी मुनाफ़िक़ों की तरह सिर्फ़ ज़बान से तौबा काफ़ी नहीं) **तो बेशक** (ऐसों के लिए) **अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने वाले रहमत करने वाले हैं(89) बेशक जो लोग काफ़िर हुए अपने ईमान**

लाने के बाद फिर बढ़ते रहे कुफ़्र में (यानी ईमान नहीं लाए) **उन की तौबा** (जो कि और गुनाहों से करते हैं) **बिल्कुल भी क़ुबूल न होगी** (ईमान न होने की वजह से) **और ऐसे लोग** (इस तौबा के बाद भी उसी तरह) **पक्के गुमराह हैं(90) बेशक जो लोग काफ़िर हुए और कुफ़्र ही की हालत में मर भी गये सो उनमें से किसी का ज़मीन भर सोना भी** (जुर्माने में) **न लिया जाएगा चाहे वो बदले में उस को देना भी चाहे** (और बे दिये तो कौन पूछता है), **उन लोगों को दर्दनाक सज़ा होगी और उनके हिमायती** (व मददगार) **भी न होंगे(91)।**